विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 2 अंक: 7 सितंबर, 2009

हिंदी विद्वानों का सचिवालय आगमन

पिछली तिमाही में अनेक हिंदी विद्वानों व हिंदी प्रेमियों का सचिवालय में आगमन हुआ । नीदरलैंड्स के यूरोपियन यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट-एंड ईस्ट के अध्यक्ष एवं पी आई ओ संस्थान के निदेशक प्रो. मोहन के. गौतम महात्मा गांधी संस्थान एवं रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान, मॉरीशस के निमंत्रण पर तृतीय वार्षिक टैगोर मेमोरियल व्याख्यानमाला के अंतर्गत ' रवींद्रनाथ टैगोर एंड द इंडियन डायस्पोरा ' विषय पर व्याख्यान देने मॉरीशस आए थे । व्याख्यान के पश्चात् वे पहली जुलाई को सचिवालय आए । नीदरलैंड्स के विशेष संदर्भ में हिंदी की वैश्विक स्थिति पर उनके साथ गंभीर चर्चा हुई । उनके साथ रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान की परियोजना प्रबंधक डॉ. सुचिता रामदीन भी थीं ।

बाएँ से दूसरे प्रो. मोहन के. गौतम एवं कंधे पर दुशाला रखे डॉ. सुचिता रामदीन

भारत के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विभूति नारायण राय 28 अगस्त, 2009 को विश्व हिंदी सचिवालय पधारे । उनके साथ हिंदी के वरिष्ठ कथाकार श्री से. रा. यात्री भी थे । श्री राय मॉरीशस में आयोजित ' विश्व भोजपुरी सम्मेलन ' में भाग लेने आए थे ।

श्री विभूति नारायण राय ने सचिवालय की महासचिव एवं उप महासचिव से सचिवालय की गतिविधियों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की । इस संभावना पर भी विचार किया गया कि भविष्य में विश्व हिंदी सचिवालय एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय साथ मिलकर कोई योजना बनाएँ जिससे हिंदी का एक आधिकारिक भाषा के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में पहुँचने का मार्ग आसान हो सके । उन्होंने यह भी बताया कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी के जीवित रचनाकारों की एक ऐसी निर्देशिका बनाना चाहता है जिससे विश्व भर में फैले उनके प्रशंसक, हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ और प्रकाशक उनके बारे में जरूरी सूचनाएँ हासिल कर सकें । उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय से भी इस दिशा में सहयोग करने को कहा ।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन में भारत से भाग लेने आए अंतर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलन के महासचिव श्री अरुणेश नीरन ; साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली से प्रकाशित ' समकालीन भारतीय साहित्य ' के संपादक श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केंद्र में एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. देवेंद्र कुमार चौबे; इतिहासकार डॉ. रश्मि चौधरी; बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केंद्र के संयोजक प्रो. सदानंद शाही; भोजपुरी के सुप्रसिद्ध नाटककार श्री महेंद्र प्रताप सिंह; त्रिपुरा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विनोद कुमार मिश्र; पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (मेघालय) के हिंदी विभाग से डॉ. माधवेंद्र प्रसाद पांडेय; राँची विश्वविद्यालय (झारखंड) के हिंदी विभाग से डॉ. जंग बहादुर पांडेय; अखिल विश्व भोजपुरी विकास मंच के महासचिव श्री प्रदीप कुमार सिंह; विश्व भोजपुरी सम्मेलन (पश्चिम बंगाल) के युवा अध्यक्ष श्री सचिन त्रिपाठी तथा भारतीय रेल के कर्मठ हिंदी प्रेमी श्री नवीन मिश्र अपने हिंदी प्रेम के कारण विश्व हिंदी सचिवालय पधारे ।

बाएँ से डॉ. (श्रीमती) अरुण, श्री विभूति नारायण राय,
श्री से. रा. यात्री और डॉ. मिश्र

इसके अलावा मॉरीशस के हिंदी साहित्यकारों पर डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने मॉरीशस आए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सत्यकाम एवं निर्माता श्री दलजीत सचदेवा ने सचिवालय पधारकर हिंदी की गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की । ••

अपनी भाषा की जड़ें मनुष्य में बहुत गहरी होती हैं । अपनी भाषा के माध्यम से मनुष्य जैसा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वैसा अन्य भाषा के माध्यम से नहीं ।

फ़ादर कामिल बुल्के

जन्मशताब्दी

हिंदी के वरद पुत्र

फ़ादर कामिल बुल्के

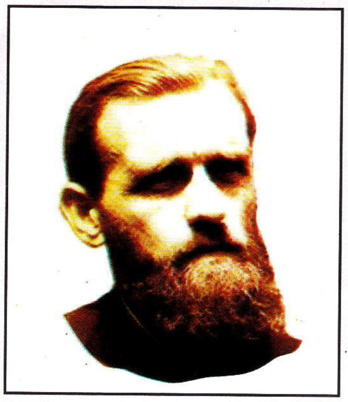

यह वर्ष फ़ादर कामिल बुल्के का जन्मशताब्दी वर्ष है । उनका 100 वाँ जन्मदिन पहली सितंबर को था। गैर हिंदी भाषी और गैर भारतीय होते हुए भी जिस निष्ठा एवं समर्पण के साथ उन्होंने हिंदी की सेवा की, वह अनुपम है । उन्हें अपना श्रद्धा सुमन चढ़ाने के लिए उनके जीवन और साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है :

हिंदी के संत साहित्यकार डॉ. फ़ादर कमिल बुल्के का जन्म बेल्जियम के पश्चिम फ्लैंडर्स प्रांत के रम्सकपेल नामक गाँव में 1 सितंबर, सन् 1909 को हुआ था । उनके पिता का नाम अदोल्फ बुल्के और माँ का नाम मरिया बुल्के था । वहां उनके पूर्वज कई पीढ़ियों से रह रहे थे और आज भी उनके कई रिश्तेदार वहां रहते हैं । बाद में उनका परिवार काम की तलाश में लिस्सेवेगे चला आया ।

अभाव और संघर्ष भरे अपने बचपन के दिन बिताने के बाद बुल्के ने कई स्थानों पर अपनी पढ़ाई जारी रखी और लूवेन विश्वविद्यालय (लिस्सेवेगे) से वर्ष 1930 में इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की । बाद में जेसुइट सेमिनरी में लैटिन भाषा पढ़ने के बाद, ब्रदर बने बुल्के ने अपना जीवन एक संन्यासी के रूप में बिताने का निश्चय किया । कई महत्वपूर्ण संस्थाओं में अध्ययन करने के बाद वे धर्म सेवा के लिए भारत आ गए व यहाँ उन्होंने विज्ञान के अध्यापक के रूप में संत जोसेफ कॉलेज, दार्जिलिंग और येसु संघियों के मुख्य निवास स्थान मनरेसा हाउस, राँची में प्रवास किया । कई संस्थाओं से जुड़े रहने के बाद सन् 1941 में वे पुरोहित बने ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1947 में एम. ए. (हिंदी) तथा ' रामकथा : उत्पत्ति और विकास ' विषय पर डी. फ़िल. की उपाधि प्राप्त की । वे सन् 1950 से सन् 1977 तक संत ज़ेवियर कॉलेज, राँची के हिंदी-संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे । उनकी महत्वपूर्ण हिंदी और अंग्रेजी कृतियों में उल्लेख्य हैं : रामकथा और तुलसीदास, मानस-कौमुदी तथा ईसाई धार्मिक साहित्य और दर्शन पर केंद्रित ईसा-जीवन और दर्शन, एक ईसाई की आस्था, अंग्रेजी-हिंदीकोश और बाइबिल से संबंधित कई अनूदित कृतियाँ । अपनी उदार दृष्टि, तपश्चर्या और समर्पित जीवन के कारण फ़ादर बुल्के ने भारत और पश्चिमी जगत को भावात्मक बिंदु पर जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया तथा अध्ययन और मनन द्वारा अपनी रचना आस्था को निरंतर सुदृढ़ किया । कई संस्थाओं से संबद्ध एवं पद्मभूषण (वर्ष 1974) से सम्मानित फ़ादर बुल्के एक आस्थावान और गहरी प्रार्थना में डूबे साहित्य-साधक थे ।

यद्यपि वे बहुभाषाविद् थे और अपनी मातृभाषा फ्लेमिश के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, लैटिन, ग्रीक, संस्कृत और हिंदी के भी पंडित थे, किंतु सन् 1947 ई. में हिंदी में एम. ए. करने के बाद हिंदी ही उनके मन, वचन और कर्म की-उनकी आत्मा और समस्त व्यक्तित्व की भाषा बन गई थी । उनका मानना था कि ज्ञान-विज्ञान के किसी भी विषय की सक्षम-से-सक्षम अभिव्यक्ति हिंदी में संभव है और अंग्रेजी पर आश्रित बने रहने की धारणा निरर्थक है । उनका दृढ़ विश्वास था कि हिंदी निकट भविष्य में ही समस्त भारत की सर्वप्रमुख भाषा बन जायेगी ।

फ़ादर बुल्के उन विदेशी संन्यासियों में थे, जो भारत आकर भारतीयों से अधिक भारतीय हो गए थे । उन्होंने यहाँ की जनता के जीवन से अपने को एकाकार कर लिया था । उन्हें देख कर कोई भी व्यक्ति यह अनुभव कर सकता था कि संन्यास का अर्थ जीवन और जगत का निषेध न होकर ' स्वत्व ' का निषेध है और ' स्व ' का ऐसा विस्तार, जिसमें पूरी दुनिया के लिए ममत्व भरा हो। वे प्रत्येक आगंतुक से इतने स्नेह से मिलते थे कि वह अभिभूत हो जाता था । वे सदा यह कहते थे कि मुझे सबसे अधिक संतोष तब मिलता है, जब मैं दूसरों के लिए कुछ कर पाता हूँ । उन्होंने दूसरों के लिए कुछ कर पाने के जो माध्यम चुने थे, उनमें एक था उनका समृद्ध पुस्तकालय, जिससे वे छात्रों, शोधार्थियों और परिचितों को पढ़ने के लिए पुस्तकें दिया करते थे । दूसरा माध्यम था दु:खी जनों को उचित परामर्श देकर उनका मार्ग-दर्शन करना । उन्होंने इन सब कार्यों के लिए प्रतिदिन सबेरे नौ बजे से बारह बजे तक का समय निर्धारित कर दिया था और शुक्रवार को तो वे जैसे पूरी दुनिया के लिए दिन भर खाली थे । इसके अतिरिक्त, देश-विदेश के बहुत-से विद्वानों और सामान्य जनों की अनेक प्रकार की जिज्ञासाओं से भरे पत्र उन्हें मिला करते थे और शायद ही कोई पत्र अनुत्तरित रहता था । इस प्रकार वे आजीवन अहर्निश आत्मदान-निरत थे और इस आत्मदान और लोक-सेवा का ही एक रूप उनका हिंदी-संबंधी कृतित्व था । पूर्णता और शुद्धता का आग्रह उनमें इतना अधिक था कि वे एक-एक तथ्य की प्रामाणिकता और एक-एक प्रयोग की उपयुक्तता की जाँच पर कभी-कभी घंटों परिश्रम करते थे ।

फादर बुल्के बहुत वर्षों से अस्वस्थ चले आ रहे थे । सन् 1950 ई. के आसपास ही उनके कान खराब हो गए थे और वे श्रवणयंत्र लगाकर ही सुन पाते थे । उनका पक्वाशय बचपन से ही कमजोर था और भारत आने के बाद उन्हें पेप्टिक अल्सर हो गया था, जिससे वे सन् 1970 ई.के आसपास मुक्त हो पाए । निधन से पूर्व दस-बारह वर्षों तक कई नए रोग उनके साथी हो गए थे । वे उच्च रक्तचाप तथा गुर्दे और हृदय की कमजोरी के शिकार थे और दमा तो जैसे उनका जीवन सहचर था, किंतु वे अपने रोगों की चिंता किए बिना निरंतर कार्यरत थे । फिर भी, वे जिस रूप में अपनी जीवनी-शक्ति का बूंद-बूंद रस निचोड़ कर हिंदी की सेवा कर रहे थे, उससे उनका शरीर टूटता जा रहा था । सन् 1981 के आरंभ से ही वे अशक्त होते जा रहे थे । फिर भी उनकी दुर्दम्य जिजीविषा हार मानने को तैयार नहीं थी । वे सोचते थे कि उसी

वर्ष किसी समय बाइबिल का अनुवाद-कार्य पूरा कर लेंगे और तब अंग्रेजी-हिंदी कोश का परिवर्द्धन आरंभ करेंगे । वे जीवन की संध्या में तुलसी-संबंधी अपने चिंतन को पूरे विस्तार से शब्दबद्ध करना चाहते थे, किंतु जून के अंत में उन्हें गैंग्रीन हो गया । यद्यपि उनका इलाज मांडर ; (राँची) और कुर्जी ; (पटना) अस्पताल में हुआ, किंतु उनकी हालत सुधरने के बजाय बिगड़ती ही गई । 8 अगस्त को वे पटना से दिल्ली ले जाए गए, जहाँ 17 अगस्त 1982 को सबेरे साढ़े आठ बजे उनकी मृत्यु हो गयी । दूसरे दिन दिल्ली के निकॉलसन कब्रगाह में उनके स्नेहियों और मित्रों की उपस्थिति में उन्हें अंतिम विदाई दी गई ।

फ़ादर बुल्के आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन वे अपने हजारों-हजार प्रशंसकों के हृदय में अब भी जीवित हैं । वस्तुतः वे एक ऐसी महान् आत्मा थे, जिनकी स्मृति शताब्दियों तक बनी रहेगी और जिनके कृतित्व का महत्व दिनों-दिन बढ़ता जाएगा । ••

' हिंदी चेतना ' से साभार

फ़ादर कामिल बुल्के की हिंदी में प्रकाशित कृतियाँ

1. मुक्तिदाता, काथलिक प्रेस, राँची. 1942
2. रामकथा : उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद, इलाहाबाद, 1950 (मलयालम अनुवाद : अबयदेव : साहित्य अकादेमी, त्रिचुर, 1978)
3. लूई की अमर कहानी: धार्मिक साहित्य समिति, राँची, 1958 (मराठी अनुवाद : जे बेरानका, पुणे, 1959)
4. नील पक्षी (मरिस मैंटरलिंक के फ्रेंच नाटक का अनुवाद) बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, 1959
5. पर्वत- प्रवचन (सरमन आन द माउण्ट का अनुवाद): काथलिक प्रेस ,राँची, 1959
6. संत लूकस के अनुसार येसू ख्रीस्त का पवित्र समाचार, काथलिक प्रेस, राँची, 1963
7. अंगरेज़ी - हिंदी कोश : काथलिक प्रेस, राँची, 1968
8. चारों सुसमाचार : काथलिक प्रेस, राँची, 1970
9. प्रेरित चरित, धार्मिक साहित्य, राँची, 1973
10. हिंदी बाइबिल : न्यूटेस्टामेंट, काथलिक प्रेस, राँची, 1977
11. रामकथा और तुलसीदास, हिन्दुस्तान एकेदेमी, इलाहाबाद, 1978
12. मानस कौमुदी, अनुपम प्रकाशन, पटना, 1979
13. ईसा - जीवन और दर्शन, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली, 1982
14. पवित्र बाइबिल : हिन्दी साहित्य समिति, इलाहाबाद, 1986
15. बाइबिल के तीन लघु उपन्यास : अनुपम प्रकाशन, पटना, 1987

इसके अतिरिक्त ईसाई धार्मिक पाठ साहित्य की दस ष्षुस्तकें और ईसाई धार्मिक विधि साहित्य की दो पुस्तकें उनके द्वारा अनूदित हुई हैं । हिंदी भाषा और साहित्य पर दो पुस्तिकाएँ हिंदी में प्रकाशित ।

निबंध संग्रह

1. मंथन : संपादक : डॉ. भूपेंद्र कलसी, बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना, 1996

राम कथा और हिंदी : एक इसाई की आस्था, रामकथा : संपादक डॉ. दिनेश्वर प्रसाद,
प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005 ।

- विविध विषयों पर लगभग साठ निबंध, जिनमें रामकथा, तुलसी हिंदी भाषा और साहित्य - विषय प्रमुख हैं । सैंतीस रेडियो वार्ताएँ और चार साक्षात्कार उपलब्ध हैं।

श्रद्धांजलि

मॉरीशस के कर्मठ हिंदी सेवी पं. धर्मवीर घूरा नहीं रहे

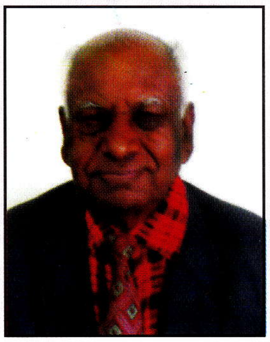

मॉरीशस के हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध लेखक पं. धर्मवीर घूरा एम. बी. ई. नही रहे । उनका निधन 80 वर्ष की आयु में गुरुवार 17 सितम्बर, 2006 को हो गया । हिंदी जगत ने एक कर्मठ हिंदी सेवी और लेखक को खो दिया ।

धर्मवीर घूरा जी के बचपन में ही उनके माता - पिता स्वर्ग सिधार गए थे । अपना जीवन बसर करने के लिए घूरा जी को मज़दूरी करनी पड़ी । उनके बचपन के ज़माने में पढ़ने - लिखने की कोई सुविधा नहीं थी, फिर भी अपने परिश्रम के बल पर उन्होंने हिंदी पढ़ी और सरकारी स्कूल में हिंदी अध्यापक बने, फिर स्कूल निरीक्षक पद पर नियुक्त हुए ।

पं. घूरा जी का हिंदी सेवा क्षेत्र विस्तृत था । अध्यापक के रूप में हिंदी पढ़ाते, आर्य पुरोहित के नाते घरों में, शादी - विवाह के अवसर पर जनसमूह में, साहित्यिक समारोहों में हिंदी में भाषण दिया करते । शायद ही कोई हिंदी समारोह पं. धर्मवीर घूरा की अनुपस्थिति में मनाया गया हो । हिंदी समारोहों में उपस्थित होना वे अपना परम कर्त्तव्य समझते थे ।

सन् 1961 में श्री मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने हिंदी लेखक संघ की स्थापना पं. धर्मवीर घूरा के सहयोग से की थी । लेखक संघ के प्रधान के नाते घूरा जी हिंदी साहित्य को विकासोन्मुख करने में समर्पित हो गए । देश के सभी पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख छपते। वे एक मंजे हुए लेखक थे । उनकी रचनाएँ अनेक पुस्तकों में संकलित हैं। स्थानीय रेडियो पर उनका 'प्रयास' नामक साप्ताहिक कार्यक्रम बीस वर्ष से अधिक समय तक चलता रहा जिसमें सैकड़ों लोगों ने भेंटवार्ता आदि में भाग लिया । छात्र-छात्राओं को भी वे नहीं भूले थे ।

पं. धर्मवीर घूरा हिंदी लेखक संघ के प्रधान थे और मैं महामंत्री के पद पर वर्षों उनके साथ साहित्योन्नयन में कार्यरत रहा । आज वे नहीं हैं तो उनकी अनुपस्थिति मुझे बहुत खल रही है। मैं अपनी और हिंदी लेखक संघ तथा पूरे हिंदी जगत की ओर से उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ ।

इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ
मान्य प्रधान, हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस

महासचिव की ओर से

शत-शत नमन

जुलाई, अगस्त और सितंबर के महीने हिंदी के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहे । हिंदी प्रेमियों ने 28 जुलाई को तुलसी जयंती, 1 अगस्त को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जयंती और 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया । 1 सितंबर 1909 को बेल्जियम में पैदा हुए अभारतीय मूल के हिंदी विद्वान् फादर कामिल बुल्के का भी उनकी जन्मशती के अवसर पर श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया।

भारतीय जनमानस पर गोस्वामी तुलसीदास का बड़ा गहरा प्रभाव है । रामचरितमानस को पढ़ने के लिए जन साधारण से लेकर विद्वज्जन तक लालायित रहते हैं। चौपालों से लेकर विश्वविद्यालयों तक ' मानस ' का पठन-पाठन और अध्ययन अनवरत रूप से गतिमान है । इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रभावी गति मिली है । रामचरितमानस ने भारत में ही नहीं, भारत से बाहर भी हिंदी के उन्नयन में अभूतपूर्व योगदान दिया है ।

प्रवासी भारतीयों के लिए रामचरितमानस अमृतघट है । जिस रघुनाथगाथा को तुलसीदास जी ने ' स्वांत : सुखाय ' लिखा था वह विश्व भर में फैले भारतीय समुदाय के लिए ' सर्वांत : सुखाय ' का मूल मंत्र बन गई । 19 वीं शताब्दी में गन्ने के खेतों में काम करने के लिए गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरीशस, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, फीजी, त्रिनिदाद एंड टोबैगो गए भारतीयों ने अपनी संस्कृति और अस्मिता की रक्षा ' मानस ' के माध्यम से ही की । उन्होंने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया था कि अपनी संतानों को धर्म और संस्कृति से जोड़ने के लिए रामचरितमानस से जुड़ना आवश्यक है । अत: उन्होंने उन्हें हिंदी सिखायी ।

विपरीत परिस्थितियों में भी भाषा को बचाए रखने में रामचरितमानस ने कवच का काम किया । गिरमिटिया मजदूरों को आप्रवास के देशों में रोजी-रोटी के लिए हिंदी की आवश्यकता नहीं थी ; उन्होंने संस्कृति-संरक्षण के लिए हिंदी को अपनाया । हिंदी को विश्वभाषा बनाने में तुलसीदास जी के रामचरितमानस का बहुत बड़ा योगदान है। तुलसीदास जी को हमारा शत-शत प्रणाम ।

आधुनिक युग में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का हिंदी के उन्नयन में बड़ा स्मरणीय योगदान रहा है । वे महात्मा गाँधी के निष्ठावान सहयोगी और भारत के स्वराज्य-आंदोलन के एक प्रभावी नेता थे । अपनी सादगी, सिद्धांत-निष्ठा और आदर्श-प्रियता के कारण वे जन-जन के ह्रदय में राजर्षि के रूप में प्रतिष्ठित हुए । यद्यपि वे हिंदी के विद्वान या साहित्यकार नहीं थे किंतु हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सर्वविदित है । प्रयाग के हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यों में उन्होंने भारी योगदान दिया । संविधान सभा में दिए गए अपने वक्तव्य में उन्होंने हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने और उसे नागरी लिपि में लिखने का जोरदार समर्थन किया । उनके विराट् व्यक्तित्व और अकाट्य तर्क के कारण हिंदी के विरोधी भी हिंदी का मुखर विरोध नहीं कर पाए । ऐसे निष्ठावान हिंदी सेवी को हमारा शत-शत नमन ।

फादर कामिल बुल्के सन् 1935 में बेल्जियम से भारत ईसाई धर्म के प्रचार के लिए आए थे लेकिन भारत आकर वे रामकथा पर मुग्ध हो गए । भारत में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि बिना हिंदी सीखे वे भारतीय जन-जीवन में रम नहीं पायेंगे । अत: उन्होंने हजारीबाग (बिहार) के पंडित बदरीदत्त शास्त्री से हिंदी और संस्कृत पढ़ी । अपनी लगन और प्रतिभा के बलबूते पर उन्होंने शीघ्र ही वाल्मीकि-रामायण और रामचरितमानस के साथ ही अन्य प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन कर डाला । भारतीय संस्कृति के सर्वस्पर्शी स्वरूप ने उन्हें बहुत प्रभावित किया ।

हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने इलाहाबाद विश्व-विद्यालय को चुना । वहाँ उन्होंने डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल, डॉ. देवी प्रसाद शुक्ल और डॉ. माताप्रसाद गुप्त जैसे हिंदी मनीषियों के चरणों में बैठकर हिंदी का उच्च ज्ञान प्राप्त किया । पीएच. डी के लिए उन्होंने ' राम कथा का विकास ' विषय चुना । इस पर कार्य करते समय वे गोस्वामी तुलसीदास और उनके रामचरितमानस से बहुत प्रभावित हुए । उनका यह अध्ययन कालांतर में रामकथा के संदर्भ में मील का पत्थर बन गया । हिंदी के इतिहास में वे अपने इस शोध-प्रबंध के लिए अमर हो गए । उन्होंने अपना जीवन हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के लिए समर्पित कर दिया ।

सन् 1968 में उन्होंने अंग्रेज़ी हिंदी कोश लिखकर हिंदी का एक और महत्वपूर्ण कार्य किया । यह शब्दकोश हिंदी प्रेमियों के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ । उनकी हिंदी सेवा के लिए भारत सरकार ने उन्हें सन् 1974 में पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया ।

फादर कामिल बुल्के सन् 1976 में जब द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए मॉरीशस आए तब उनकी धाराप्रवाह, स्पष्ट एवं प्रांजल हिंदी सुनकर हम सभी अभिभूत हो गए थे । हिंदी के इस निष्ठावान विद्वान सेवक का हम शत-शत अभिनंदन करते हैं । उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हमने इस अंक में उन पर कुछ विशेष सामग्री दी है ।

हमारे लिए 14 सितंबर का दिन भी बहुत मूल्यवान है । इसी दिन सन् 1949 में हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी । इस कालावधि में हिंदी ने बहु आयामी प्रगति की है जिसका लेखा-जोखा भारत और भारत से बाहर आयोजित अनेक समारोहों में प्रस्तुत किया गया । हिंदी दिवस का अभिनंदन करते हुए हमारी यही हार्दिक कामना है कि हिंदी विश्व भाषा के रूप में अधिकाधिक फले-फूले और शीघ्रातिशीघ्र संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का बहुप्रतीक्षित पद प्राप्त करे ।

डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण

संपादकीय

हिंदी दिवस : विश्व हिंदी दिवस

14 सितंबर, 2009 बीत गया । हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, बैंकों, सरकारी उपक्रमों और शिक्षण संस्थानों ने अपने-अपने कार्यालयों में बढ़-चढ़कर 'हिंदी दिवस ' का आयोजन किया । इस तिथि को यादगार बनाने के लिए सबने अपनी-अपनी सुविधानुसार हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी मास का भी आयोजन किया । इस दौरान कार्यालयों में हिंदी की अनेक प्रतियोगिताएँ की गईं और सफल प्रतियोगियों को ' हिंदी दिवस ' के अवसर पर पुरस्कृत और सम्मानित किया गया । कार्यालयों के कर्मचारियों द्वारा हिंदी में काम और हस्ताक्षर करने के लिए संकल्प लिए गए । हिंदी कवि सम्मेलन आयोजित किए गए । हिंदी नाटकों का मंचन किया गया। हिंदी में तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए । कुल मिलाकर सितंबर का पूरा महीना हर साल की तरह इस साल भी हिंदीमय हो उठा ।

भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने भी 14 सितंबर को सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन, हिंदी में पुस्तक लेखन तथा गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए पुरस्कार प्रदान किए । उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी को प्रौद्योगिकी की दृष्टि से संपन्न करना आवश्यक है । हिंदी के प्रयोग में सहायक साफ्टवेयरों का निर्माण नवीनतम तकनीक को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए तभी हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी के बीच सामंजस्य स्थापित हो सकेगा । उन्होंने कहा कि भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ रहा है । हिंदी को वैश्विक फलक प्रदान करने के लिए उन्होंने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को एक महत्वपूर्ण माध्यम माना ।

इस वर्ष 14 सितंबर को ' हिंदी दिवस ' के अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ देते हुए भारत के गृह मंत्री श्री पी. चिदंबरम ने हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रचार के लिए बोलचाल के शब्दों के प्रयोग पर बल दिया । उन्होंने यह आशा प्रकट की कि अपने दिन-प्रतिदिन के कामकाज में आसान हिंदी का प्रयोग करके हम हिंदी भाषा की स्थिति और भी सुदृढ़ कर सकते हैं । उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि यह सचिवालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन करेगा तथा पूरे विश्व में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करने और उसे बढ़ावा देने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी पुस्तकालय को स्थापित किया जाना सुनिश्चित करेगा ।

'हिंदी दिवस ' न केवल भारत में, बल्कि उन देशों में भी मनाया जाता है जहाँ हिंदी-प्रेमी रहते हैं । इसीशृंखला में मेल्बर्न से पिछले छह वर्ष से प्रकाशित होनेवाले 'हिंदी-पुष्प ' (साउथ एशिया टाइम्स का हिंदी परिशिष्ट) के संपादक श्री दिनेश श्रीवास्तव ने 'हिंदी-पुष्प ' के सितंबर, 2009 के अंक में अपने ' हिंदी दिवस ' पर लिखे संपादकीय में यह विश्वास प्रकट किया है कि हिंदी जन-भाषा है और यह हमेशा फलती-फूलती रहेगी । ' हिंदी-पुष्प ' के इसी अंक में 5 सितंबर को मेल्बर्न में 'साहित्य संध्या ' के साथ मनाए गए ' हिंदी दिवस ' पर एक रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई है । इस तरह विदेशों में रह रहे हिंदी प्रेमी भी वर्ष में एक बार ' हिंदी दिवस ' मनाते हैं । भले ही भारत में 14 सितंबर को ही सरकारी कार्यालयों में ' हिंदी दिवस ' मनाया जाता है, परंतु भारत से बाहर अन्य देशों में रहनेवाले हिंदी प्रेमी अपनी सुविधा देखकर वर्ष में किसी एक दिन ' हिंदी दिवस ' अवश्य मनाते हैं और उस अवसर पर तरह-तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं । इस तरह वे विदेशों में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के लिए एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

भारत में ' हिंदी दिवस ' का आयोजन राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी सरकारी आदेश से जुड़ा हुआ है । इसलिए पिछले लगभग चार दशकों से यह दिन 14 सितंबर को ही मनाया जाता है । जबकि विदेशों में बसे हिंदी-प्रेमी बिना किसी आदेश के अपने हिंदी-प्रेम के कारण वर्ष में एक बार ' हिंदी दिवस ' अवश्य मनाते हैं ।

जिस तरह भारत में 14 सितंबर का एक विशेष महत्व है, उसी तरह विश्व में 10 जनवरी का । संपूर्ण विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने सन् 2006 में यह निर्णय लिया था कि 10 जनवरी का दिन पूरे विश्व में ' विश्व हिंदी दिवस ' के रूप में मनाया जाएगा । पिछले चार वर्षों से विश्व के अनेक देशों में रह रहे असंख्य हिंदी प्रेमी और हिंदी सेवी संस्थाएँ ' विश्व हिंदी दिवस ' का आयोजन करने लगी हैं । भारत सरकार के विश्वव्यापी मिशन एवं दूतावास भी स्वयं अथवा स्थानीय हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से ' विश्व हिंदी दिवस ' का आयोजन करते हैं । एक दिन ऐसा आएगा जब भारत में ' हिंदी दिवस ' की तरह पूरे विश्व में ' विश्व हिंदी दिवस ' का अनुकूल वातावरण अवश्य बनेगा ।

10 जनवरी अब दूर नहीं । संपूर्ण विश्व के हिंदी प्रेमियों एवं संस्थाओं से यह अनुरोध है कि वे 10 जनवरी, 2010 को और उसके बाद भी हर साल 10 जनवरी को ' विश्व हिंदी दिवस ' का भव्य आयोजन करें । इस आयोजन में हिंदी प्रेमियों, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़नेवाले स्थानीय छात्रों को अवश्य आमंत्रित करें । इस अवसर पर रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करें, हिंदी फिल्में दिखाएँ, विश्व भर में हिंदी का अनुकूल वातावरण बनाएँ और अपने इस अभियान में अधिक से अधिक हिंदी प्रेमियों को शामिल करते चलें ।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम विश्व के अधिक से अधिक देशों को हिंदी के अपने इस वैश्विक अभियान में साथ लेकर चलें ताकि समय आने पर ये तमाम देश आगे बढ़कर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने में हमें खुलकर अपना समर्थन प्रदान कर सकें ।••

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक
डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण
संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

बधाई

मृदुला गर्ग

वरिष्ठ कथाकार मृदुला गर्ग को स्पंदन कथा शिखर सम्मान

साहित्य, संस्कृति तथा कलाओं के प्रोत्साहन के लिए समर्पित ' स्पंदन संस्था भोपाल ' द्वारा ' स्पंदन कथा शिखर सम्मान वर्ष 2009' के लिये हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका मृदुला गर्ग को चुना गया है । यह चयन सर्वसम्मति से वरिष्ठ निर्णायक मंडल द्वारा किया गया है । निर्णायक मंडल के सदस्य थे-प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (समन्वयक) श्री गोविंद मिश्र, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, श्रीमती चित्रा मुद्‌गल तथा प्रो. कमला प्रसाद ।

पुरस्कार के अंतर्गत इकतीस हजार रुपए की राशि, शॉल, श्रीफल तथा स्मृति चिह्न शामिल लंदन की कवयित्री श्रीमती जय वर्मा को उनके काव्य संग्रह ' सहयात्री हैं। यह पुरस्कार भोपाल में एक भव्य समारोह (दिसंबर माह) में प्रदान किया जाएगा ।

उर्मिला शिरीष, *संयोजक*

हिंदी का व्याकरण अपेक्षाकृत सरल है; इसके अतिरिक्त लिपि तथा उच्चारण में पूर्ण सामंजस्य है; अत: हिंदी का काम चलाऊ ज्ञान बड़ी सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है । कृत्रिम पारिभाषिक शब्दों के निर्माण से अप्रचलित संस्कृत संज्ञाओं के बाहुल्य के कारण आजकल हिंदी का सरल स्वाभाविक रूप संकट में पड़ा है । हमारे प्रतिभाशाली साहित्यकारों की सहायता से यह संकट दूर हो सकता है । कुछ रचनाओं में बेचारी हिंदी सिर से पैर तक कृत्रिम अलंकारों से लदी निष्प्राण मध्यकालीन कुलवधू बन गयी । वह गुड़ियानुमा रूप उत्तर भारत की संस्कृति का वाहक नहीं बन सकता है; हमारे साहित्यकारों से आशा की जाती है कि वे जनता की भाषा के आधार पर हिंदी का ऐसा रूप प्रस्तुत करेंगे, जो जीता-जागता हो, जो यौवन के उल्लास से कूट-कूट कर भरा हो, जो अपने सहज-स्वाभाविक सौंदर्य द्वारा समस्त देश को मुग्ध करने में समर्थ हो ।

फ़ादर कामिल बुल्के

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती
पुरस्कार वितरण रमारोह

3 अगस्त, 2009 को नई दिल्ली के हिंदी भवन में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के जन्म दिवस पर आयोजित राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती एवं पुरस्कार वितरण समारोह में इस वर्ष का राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विशिष्ट पुरस्कार दुमका (झारखंड) की कवयित्री श्रीमती संध्या गुप्ता को उनके काव्य संग्रह ' बना लिया मैंने भी घोंसला ' के लिए, श्रीमती राकेश नंदिनी गुप्ता को उनके काव्य संग्रह ' पुरंदरों ' के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार ' 2009 प्रदान किया गया । इस वर्ष से प्रवासी लेखक/लेखिकाओं को पुरस्कृत करने हेतु पहले प्रवासी भारतीय साहित्यकार सम्मान ' 2009 के लिए लंदन की कवयित्री श्रीमती जय वर्मा को उनके काव्य संग्रह ' सहयात्री

जय वर्मा

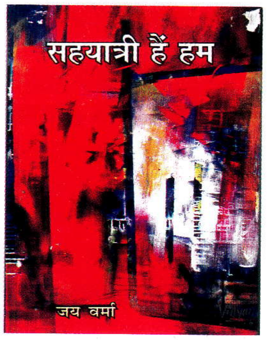

हैं हम ' के लिए दिया गया । डॉ. सीताराम गुप्त ' दिनेश ' को उनकी पुस्तक ' जियो और जीने दो ' के लिए विशेष गहोई साहित्य सम्मान 2009 प्रदान किया गया । समारोह में समाजसेवा और दवा निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु क्रमश: श्री अरविंद गोयल एवं श्री अरविंद बिस्वारी को भी सम्मानित किया गया । समारोह की अध्यक्षता साहित्यकार एवं पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय ने की । इनके अतिरिक्त सांसद श्री टी. मैनिया, दिल्ली के महापौर डॉ. कँवर सेन, विधायक श्री नसीब सिंह, गाजियाबाद की महापौर श्रीमती दमयंती गोयल, अखिल भारतीय गहोई वैश्य महासभा के अध्यक्ष श्री राधेश्याम कुचपा, निगम पार्षद श्री राजेश गौड़, वरिष्ठ कवि श्री शेरजंग गर्ग, श्री यागेंद्रनाथ शर्मा ' अरुण ', गहोई वैश्य महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री कैलाश नारायण साँवला एवं सुश्री अर्चना डालमिया मंच पर उपस्थित थीं । भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के महानिदेशक श्री वीरेंद्र गुप्ता, सर्वश्री शील मधुर, प्रेम जनमेजय, कृष्ण वीर चौधरी, के. सरीन, सुशील कुमार सिंह, आलोक श्रीवास्तव, नवीन चंद्र लोहनी, उमाशंकर मिश्र उपस्थित थे । कवयित्री श्रीमती अंजू जैन ने गुप्ताजी की कविता का सुरमय पाठ कर श्रोताओं का मन मोह लिया । कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रोताओं एवं साहित्य सेवियों की उपस्थिति रही । संचालन श्री दीपक नरेश ने किया तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त मैमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष राममोहन गुप्त ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

' साहित्य अमृत ' से साभार

- *हिंदी की सेवा करूँगा, जब तक शरीर में प्राण है ।*

फ़ादर कामिल बुल्के

' ये मेरे कामकाजी शब्द ' का विमोचन

बाएँ से डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. रत्नाकर पांडेय, डॉ. नित्यानंद तिवारी, श्री अजित कुमार, श्री देवी प्रसाद त्रिपाठी और डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण

प्रवासी भारतीय समाज की ओर से 24 जुलाई 2009 को त्रिवेणी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में हिंदी के वरिष्ठ कवि एवं तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, जापान में कार्यरत प्रोफेसर सुरेश ऋतुपर्ण के सद्य:प्रकाशित काव्य-संग्रह ' ये मेरे कामकाजी शब्द ' का विमोचन डॉ. रामदरश मिश्र की अध्यक्षता में हुआ।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं समालोचक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने अपनी आलोचनात्मक टिप्पणी में कहा कि ' ये मेरे कामकाजी शब्द ' एक उत्कृष्ट काव्य-संग्रह है । मुझे सन् 70 के आसपास के कवि ऋतुपर्ण याद आ रहे हैं । वे इनके गहन संघर्ष के दिन थे । इनके संग्रह के शीर्षक की तरह ही ये भी बड़े कामकाजी आदमी हैं । और यह अत्यन्त स्वाभाविक बात है । जिस आदमी को कुछ करना होता है उसके सामने लक्ष्य तो रहेगा ही ।

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. नित्यानंद तिवारी ने संग्रह की कविताओं पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एक हायकुनुमा कविता है ' पहला हिमपात ' सारी रात/हवा ने/ धुनी कपास । इस छोटी-सी कविता को पढ़ते ही हमारे मन में रात की निस्तब्धता का फैला हुआ विराट विस्तार छाने लगता है ।

डॉ. तिवारी के बाद नयी कविता के वरिष्ठतम कवि श्री अजित कुमार ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा -- पचास कविताओं के इस संग्रह को कवि ने, संग्रह के नाम वाली लंबी कविता के अलावा, तीन खंडों में बाँटा है और इन सभी खंडों में कुछ मँझोली, कुछ नन्ही-नन्ही कविताएँ संगृहीत हैं । चौथे खंड की जिस एक कविता पर इस संग्रह का नाम है ' ये मेरे कामकाजी शब्द ' वह इस संग्रह की सबसे लंबी कविता है और मुमकिन है कि अपनी नाटकीयता, मंचीय अपील, आवृत्तिमूलकता और सामाजिक सरोकार के नाते वह कवि या उनके प्रशंसकों को सर्वाधिक प्रिय भी हो । ''

समारोह के अध्यक्ष प्रो. रामदरश मिश्र के अध्यक्षीय भाषण के पूर्व सुरेश ऋतुपर्ण ने अपनी कुछ चुनी हुई कविताओं का पाठ किया ।
डॉ. रामदरश मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण की शुरुआत करते हुए कहा, '' सुरेश की एक आरंभिक कविता है -- बहुत दिन बीते / मेरे पास चिड़िया की उड़ान थी / आज मेरे पास आकाश है / और न उड़ पाने की थकान / पर फिर भी मेरा नहीं / आकाश छूने का अरमान -- कैसी विडंबना है कि जब तन थक जाता है तो मन बहुत कुछ करना चाहता है ।'' लेकिन फिर भी जो पुरुषार्थी होते हैं वे उस थकान में से भी आकाश छूने का अवसर निकाल लेते हैं ।

हिंदी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष और लोकप्रिय कवि डॉ. अशोक चक्रधर ने सुरेश ऋतुपर्ण की एक कविता की पंक्ति '' कितने-कितने रंगों के हैं दिन '' को बदलकर '' कितने-कितने रंगों के थे दिन '' कहकर अपनी विशिष्ट शैली में अतीत को याद किया । ''

इस समारोह का आयोजन प्रो. ऋतुपर्ण की षष्ठिपूर्ति के अवसर पर किया गया था । सभी वक्ताओं और उपस्थित विद्वानों ने उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दीं ।

प्रवासी भारतीय समाज के अध्यक्ष श्री नारायण कुमार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ही इस भव्य और यादगार समारोह का समापन हुआ । ••

प्रस्तुति : डॉ. अरुणा गुप्ता

प्रिय डॉ. मिश्र जी, दिनांक : 04.09.2009

' विश्व हिंदी समाचार-अंक : 6 ' की प्रति प्राप्त हुई । धन्यवाद । संपादकीय में आपने यह उल्लेख किया है कि विभिन्न लघु पत्रिकाएँ उत्कृष्ट रचनाओं, गोष्ठियों और हिंदी जगत में हो रही विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आईना हैं । यह खुशी की बात है ।

आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिडाड और अन्य देशों में आप्रवासी भारतीयों की मूल आंचलिकता और विभिन्न संस्कृतियों की पृष्ठभूमि में प्रारंभिक एवं नूतन आयामों के परिप्रेक्ष्य में विविध जानकारियां भी प्राप्त होती रहेंगी । इस पत्रिका का महत्व और भी बढ़ जाएगा यदि पत्रिका में विदेशी लेखकों के हिंदी लेख, उनके चिंतन और साहित्यिक रचनाओं से भी पाठक अवगत होते रहें ।

मेरा सुझाव है कि इस शताब्दी की उपलब्धियों को विशेष महत्व देते हुए ' विश्व हिंदी समाचार ' के अंकों के साथ-साथ, समय-समय पर हिंदी जगत में आयोजित हो रही सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों के श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-विजुअल) वितरित करते रहने पर विचार करें । इससे इक्कीसवीं शताब्दी में हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक लोकप्रियता मिलेगी ।

' विश्व हिंदी समाचार ' पत्रिका की प्रधान संपादक डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण जी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।

सादर,

आपका,
(सतीश चंद्र भारद्वाज)

सी-667, सुशान्त लोक- गुड़गांव - 122 002. (हरियाणा)

' प्रवास में पहली कहानी ' का विमोचन

मंच पर लेखिका सहित कई जानेमाने साहित्यकार

ब्रिटेन की हिंदी-उर्दू महिला कथाकारों का प्रथम कहानी संग्रह ' प्रवासी में पहली कहानी ' का लंदन में लोकार्पण किया गया ।

नेहरू केंद्र में आयोजित इस कार्यक्रम का आयोजन लंदन स्थित संस्था कथा यूके ने किया और समारोह की अध्यक्षता की बीबीसी हिंदी सेवा की पूर्व अध्यक्ष अचला शर्मा ने ।

इस कथा संग्रह का संपादन किया है उषा वर्मा और चित्रा कुमार ने ।

कहानी संग्रह की संपादिका उषा वर्मा ने इस अवसर पर आनेवाली पीढ़ी को संबोधित करते हुए कहा, '' यदि मैं तुम्हारी पीढ़ी में इन किताबों के माध्यम से जीवित रहूं तो यही मेरी मुक्ति है । ''

उनका कहना था, '' बाहरी प्रयोजन न होने पर भी हम लिखेंगे, लिखना अपने अंदर से बाहर आना होता है । लेखन हमारी संपूर्णता का सवाल है । ''

हिंदी और उर्दू कहानियों की तुलना करते हुए उनका मत था, '' ऐसा मेरा खयाल है कि उर्दू कहानियों में इंटेलेक्चुअल टफनेस हिंदी कहानियों से अधिक है, जबकि हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक विवेक गहराई से स्पष्ट हुआ है । ''

इस अवसर पर मौजूद काउंसलर श्री ग्रेवाल की सोच थी, '' हमें इन कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करवाना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी कि इन पुस्तकों को किसी भी तरह यहां के पुस्तकालयों में पहुंचाया जाए । ''

समारोह में कीर्ति चौधरी की कहानी का पाठ ' कृति यूके' की अध्यक्षा तितिक्षा शाह ने किया ।

समारोह की अध्यक्षा अचला शर्मा का कहना था कि इस प्रकार के संकलन साहित्य को एक अलग दृष्टि से देखने में सहायक होते हैं ।

' कथा यूके ' के महासचिव, कथाकार तेजेंद्र शर्मा ने घोषणा की कि जल्दी ही एक और कहानी संकलन का विमोचन नेहरू केंद्र में होगा जिसमें ब्रिटेन के उर्दू कहानीकारों की कहानियाँ हिंदी साहित्य जगत के सामने अनुवाद के माध्यम से प्रस्तुत की जाएंगी।

● *अब तक हम विभिन्न भाषाओं के साहित्य से अनभिज्ञ रहेंगे, तब तक समन्वय का प्रश्न उठ ही नहीं सकता । दूसरी ओर सभी भारतीय भाषाओं का अध्ययन असंभव है । इस परिस्थिति में अनुवाद अनिवार्य हो जाता है । सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अनुवाद सभी अन्य भाषाओं में कर देना बहुत समय तक असंभव रहेगा, किन्तु हिंदी प्रकाशन संस्थाओं तथा पाठकों की संख्या को दृष्टि में रखकर देखें तो इसमें कोई भी संदेह नहीं रह जाता कि निकट भविष्य में अन्य भारतीय भाषाओं के उच्चतम साहित्य का हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया जा सकता है । मेरा सुझाव है कि इसके विषय में एक व्यावहारिक सुनिश्चित योजना तैयार करें । इस योजना के कार्यान्वयन के फलस्वरूप हिंदी समस्त अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की कुंजी बन जाएगी और उससे लाभ उठाने के लोभ से अन्य भाषा-भाषी भी अपने-आप से हिंदी सीखने के लिए उत्सुक हो जायेंगे । यह सच है कि हम दूसरों पर हिंदी नहीं लाद सकते हैं, किन्तु हिंदी की उपयोगिता बढ़ाकर दूसरों को लुभाना अन्याय तो नहीं कहा जा सकता है ?*

फ़ादर कामिल बुल्के

माननीया डॉ. विनोदबालाजी, 30.8.2009

सादर नमस्कार ।

विश्व हिंदी समाचार का पाँचवाँ अंक 2009 प्राप्त हुआ । धन्यवाद ।

आपने निरंतर ' विश्व हिंदी समाचार ' के अंकों को निखारने का जो कार्य किया वह निश्चय ही हिंदी के वैश्विक फैलाव को बढ़ावा देगा । एक ओर जहाँ विदेशों में बसनेवाले भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने में आपके प्रयत्न सफल हो रहे हैं वहाँ विदेशियों के बीच हिंदी को एक बलवती भाषा के रूप में अपनाने की दिशा में आपके द्वारा ठोस कार्य हो रहा है । यह कार्य सराहनीय एवं अनुकरणीय है ।

10 जनवरी को विदेशों में हिंदी दिवस के रूप में अवश्य मनाना चाहिए और इसमें विश्व हिंदी सचिवालय की प्रमुख भूमिका रहेगी । भारतीय राजदूतालयों के अतिरिक्त उन युनिवर्सिटियों के द्वारा भी यह दिन मनाना चाहिए जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है ।

भारत में 14 सितंबर को ' हिंदी दिवस ' रूप में मनाने की पीछे एक विशेष उद्देश्य निहित है । उस दिन भारतीय संविधान में न केवल हिंदी अपितु भारत की सभी भाषाओं को आजादी मिली थी । इसलिए हमारी संस्था इस दिवस को अखिल भारतीय भाषाओं की आजादी का पर्व के रूप में शानदार ढंग से मनाती आ रही है । इस कार्यक्रम की सारी जानकारी के लिए हमारा मार्च विशेषांक संलग्न है ।

कृपया आपकी संस्था (सचिवालय) की विस्तृत जानकारी दें ताकि भारत की हिंदी प्रचार संस्थाओं को इस विषय में जानकारी दे सकें ।

कुशलता चाहता हूँ ।

भवदीय,

रघुनाथ भट्ट
उपाध्यक्ष : गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, एलिसब्रिज, अहमदाबाद (गुजरात): भारत

श्रद्धांजलि

फ़ादर कामिल बुल्के : ' हिंदी चेतना '

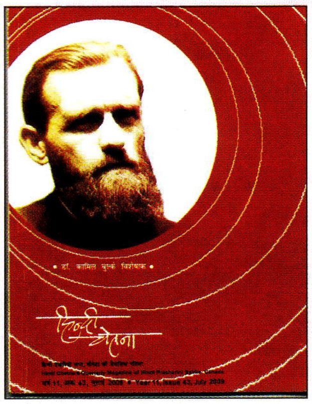

हिंदी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका "हिंदी चेतना " का जुलाई विशेषांक हिंदी भाषा एवं साहित्य के महान साधक फ़ादर कामिल बुल्के जैसे विशिष्ट साहित्यकार को उनकी जन्मशती के अवसर पर समर्पित किया गया है । बेल्जियम मूल के फ़ादर बुल्के ने विदेशी धरती पर हिंदी भाषा तथा साहित्य के उत्थान एवं प्रचार-प्रसार के लिए एक कमर्ठ योद्धा की तरह जो अविस्मरणीय योगदान दिया है, वह अतुलनीय है । 'हिंदी चेतना ' के इस विशेषांक में प्रस्तुत सामग्री में उनके कृतित्व तथा व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

इस विशेषांक की प्रमुख विशेषता यह है कि डॉ. बुल्के के जन्म, जीवन, कार्यक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, जीवन दर्शन तथा उनके द्वारा रचे विविध साहित्य से जुड़े आलेखों को समाहित करके इस अंक को न केवल पठनीय अपितु संग्रहणीय बनाया गया है । डॉ. दिनेश्वर प्रसाद के आलेख 'डॉ. कामिल बुल्के--जीवन रेखाएँ ' के साथ संलग्न चित्रों के द्वारा पाठकों को इस महान संत के जन्म, परिवार, परिवेश, अध्ययन एवं धर्म की ओर उन्मुख होने की परिस्थितियों का बहुत ही रोचक वर्णन मिलता है । डॉ. पूर्णिमा केड़िया के संस्मरण " बीसवीं शताब्दी का ऋषि " में फ़ादर बुल्के के द्वारा समय-समय पर अपने शिष्यों का मार्गदर्शन कराते हुए उनके अनमोल विचार समाहित हैं । जैसे वे कहते हैं " जन्म और मृत्यु के बीच सत्कर्म ही तो जीवन की सार्थकता तय करते हैं । " उन्होंने परोपकार करना और पुस्तक धन जोड़ना ही जीवन का पुरुषार्थ माना । पूर्णिमा जी के अनुसार राँची का डॉ. कामिल बुल्के शोध संस्थान आज भी हिंदी जगत के लिए कामधेनु बना हुआ है ।

संत तुलसीदास के अनन्य भक्त फ़ादर बुल्के के विषय में अपने आलेख में श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं " बाबा बुल्के के रोम-रोम में राम और साँस-साँस में तुलसी बस गए और यह कहा जाए कि वे तुलसी मय हो गए तो कोई अतिरेक नहीं ।" उनके अनुसार " वास्तव में तुलसी के प्रति उनकी निष्ठा तथा प्रतिबद्धता ने उन्हें न केवल हिंदी भाषा का अपितु रामचरितमानस का अधिकारी विद्वान बना दिया । "

इसी विशेषांक में फ़ादर बुल्के के प्रिय कवि गज़ेले की कविताओं का हिंदी अनुवाद भी मिलता है जिससे पाठक उनके कवि हृदय से परिचित होते हैं । प्रो. हरिशंकर आदेश के लेख 'एक महान हिंदी प्रेमी ' में फ़ादर के साथ उनकी भेंट के संस्मरणों का समावेश एक आधुनिक युग के महाकवि के द्वारा बाबा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि है । इसी प्रकार श्री आत्माराम तथा श्री महेंद्र पाल जैन के आलेखों में हमें बाबा के व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के दर्शन होते हैं ।

हिंदी भाषा के उत्थान एवं प्रचार-प्रसार के विषय में बाबा के विचार उनके स्वयं के लिखे लेख में मिलते हैं । सम्मेलन में अपने भाषण में उन्होंने कहा " हमें प्राचीन एवं नवीन का समावेश करना चाहिए । मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि हमारे साहित्यकार अपने पाठकों को देश की कीर्ति एवं गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण दिला कर उनमें आत्म-सम्मान का भाव संचारित करें । " उनके ये शब्द देश और विदेश में रहनेवाले हिंदी भाषा एवं संस्कृति प्रेमियों के लिए सदैव मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे ।

'हिंदी चेतना ' के मुख्य संपादक श्री श्याम त्रिपाठी ने अपने संपादकीय में लिखा है " फ़ादर बुल्के के सम्मान में यह अंक विश्व के लिए एक अद्भुत उपहार होगा, विशेषकर उन हिंदी साहित्यकारों के लिए जो सुंदर विदेशी धरती पर बसे हुए हैं । " ऐसे अनमोल उपहार को ग्रहण करते हुए हम सभी हिंदी प्रेमी संपादक मंडल के मुख सदस्य डॉ. सुधा ओम ढींगरा तथा डॉ. इलाप्रसाद को कोटिश: धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने इतनी विविध सामग्री के द्वारा एक महान विभूति के बहु आयामी व्यक्तित्व से परिचित करवाकर हम पाठकों को भी इस संत की जन्मशती पर श्रद्धा सुमन चढ़ाने का अवसर दिया । यह विशेषांक " सागर में बूंद नहीं " अपितु एक दीप स्तंभ की तरह हिंदी भाषा तथा साहित्य प्रेमियों का सदैव पथ प्रदर्शन करता रहेगा । उल्लेखनीय बात यह है कि विदेशी धरती पर इस अंक के लिए इतनी प्रचुर मात्रा में सामग्री एकत्रित करके आप सबने हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा, लगन एवं अगाध प्रेम की भावना से हम सब को अभिभूत किया है । पुन: बधाई एवं धन्यवाद ।

शशि पाधा (यू. एस. ए.)

समीक्षा

विश्व हिंदी समाचार

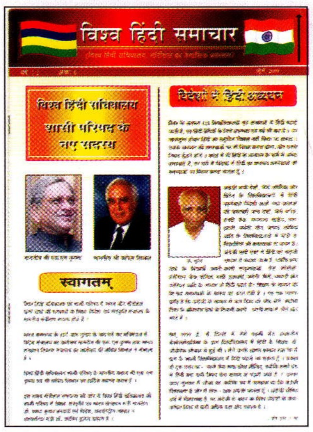

मॉरीशस से प्रकाशित हिंदी की यह समाचार पत्रिका विगत 2 वर्ष से निरंतर प्रकाशित हो रही है । पत्रिका के मुखपृष्ठ पर ' विश्व हिंदी सचिवालय ' शासी परिषद् के नए सदस्य माननीय श्री एम. एम. कृष्णा (विदेश मंत्री) एवं माननीय श्री कपिल सिब्बल (मानव संसाधन विकास मंत्री) का स्वागत किया गया है। इसी पृष्ठ पर डॉ. सुधेश के रंगीन छायाचित्र के साथ विश्व के लगभग 125 देशों में हिंदी पढ़ाए जाने में सहयोग देने की अपील की गई है । पत्रिका ने बहुत ही सुंदर ढंग से ख्यात कथाकार, लेखक स्व. श्री विष्णु प्रभाकर के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला है । पत्रिका की प्रधान संपादक डॉ. अरुण ने भी अपने संपादकीय में प्रभाकर जी के हिंदी साहित्य में योगदान की चर्चा समग्र रूप से की है । डॉ. मिश्र ने अपने संपादकीय में हिंदी की पत्रिकाओं के योगदान पर विस्तृत रूप से विचार व्यक्त किए हैं ।

विश्व हिंदी समाचार के समीक्षित अंक में हिंदी संगठन, पोर्ट लुईस में बलवंत सिंह नौबत सिंह की पुस्तक ' रामबिरिछ ' व टोरंटो से प्रकाशित हिंदी साहित्यिक पत्रिका ' सौभाग्य ' लोकापर्ण को विशेष रूप से स्थान दिया गया है । पत्रिका में इनके समाचारों से प्रत्येक हिंदी प्रेमी को यह आभास होता है कि विश्व स्तर पर भी हिंदी के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। यह अप्रवासी भारतीयों के हिंदी प्रेम को दर्शाता है । प्रवासी हिंदी साहित्य पर लंदन के नेहरू केंद्र में आयोजित संगोष्ठी तथा प्रख्यात कथाकार सूर्यबाला को वाग्मणि सम्मान का समाचार भी पत्रिका ने प्रकाशित किया है ।

पुस्तक समीक्षा खंड के अंतर्गत ' अनुवाद विज्ञान की भूमिका ' पर प्रकाशित पुस्तक की समीक्षा इस पुस्तक को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। ' हिंदी का विश्व परिदृश्य ' के अंतर्गत प्रकाशित समाचारों में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण के सम्मान में आयोजित गोष्ठी का समाचार पत्रिका के भारत प्रेम को दर्शाता है । ख्यात वरिष्ठ कथाकार राजेन्द्र यादव को जयजयवंती सम्मान तथा देवनागरी लेखन में एकरूपता की आवश्यकता एवं देवनागरी लिपि और सूचना प्रौद्योगिकी आलेख भी ज्ञानवर्धक तथा सूचनापरक हैं ।

पत्रिका के साफ सुंदर आकर्षक साज - सज्जा युक्त अंक के लिए बधाई ।

' कथा - चक्र ' से साभार

खाड़ी के देशों में हिंदी

पूर्णिमा वर्मन

खाड़ी के देशों में से संयुक्त अरब इमारात, कुवैत, ईराक व सऊदी में भी हिंदी रोज़ की बोलचाल जैसी भाषा है । दुबई और शारजाह में धनी, यूरोपीय और शासक वर्ग के अरबी लोगों को छोड़ दें तो लगभग हर व्यक्ति हिंदी बोलता और समझता है । यहां बसे भारतीयों की जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु से आता है । शेष भारत से आनेवाले भी हैं पर उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है । अपनी संस्कृति से परिचय और जुड़ाव बनाए रखने के लिए इनकी अपनी-अपनी संस्थाएं हैं जो विभिन्न पर्वो पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं । ठीक से योजना बनाई जाए और लोगों को समझाया जा सके तो हिंदी के विकास के लिए इन उत्सवों का सहारा लिया जा सकता है।

दैनिक ज़रूरतों के काम करनेवाले लोग जैसे घरों में काम करनेवाली महिलाएं, टैक्सी ड्राईवर, घर की सफाई का काम करनेवाले लोग, सब्ज़ी बेचनेवाले, सुपर मार्केट के कर्मचारी और सोने या कपड़े की दूकान वाले सब हिंदी समझते और बोलते हैं । यह सच है कि इनमें से ज्यादातर भारतीय हैं लेकिन जो लोग भारतीय नहीं हैं या जो भारतीय हैं पर जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है वे भी यहां हिंदी का प्रयोग करते हैं । उदाहरण के लिए श्रीलंकन महिलाएं जो घर की सफाई का काम करती हैं उनमें से निन्यानबे प्रतिशत हिंदी बोलती हैं । टैक्सी ड्राईवर भले ही अरबी हो पर वह हिंदी बोलता और समझता है । यही नहीं पुलिस अस्पताल, हवाईअड्डा और डाकखाना जैसे सभी सरकारी कार्यालयों में लगभग सभी अरबी मूल के लोग हिंदी बोलते हैं । हमारे एक परिचित का बेटा जिसकी मातृभाषा तमिल है, उसका कहना है कि मुझे दिल्ली में रहकर हिंदी सीखने की ऐसी ज़रूरत नहीं महसूस हुई जैसी दुबई पहुंच कर ।

फिर भी हिंदी का विकास यहां एक बोली के रूप में रहा है । ज्ञान विज्ञान साहित्य संस्कृति और कला की समृद्ध भाषा के रूप में जो सम्मान उसको मिलना चाहिए था वह नहीं मिला है । वह प्रतिष्ठित लोगों की भाषा नहीं बन सकी है । हिंदी के नाटक, कवि सम्मेलन और फिल्मों को देखने जो आभिजात्य भीड़ उमड़ती है वह आपस में बातचीत के लिए भारतीयों की तरह अंग्रेज़ियत पर ही उतर आती है ।

ब्रिटेन तथा यूनाइटेड स्टेट्स की तरह खाड़ी के देशों में अरबी-हिंदी के संयुक्त प्रयासों को बढ़ाने की ज़रूरत है । भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में अरबी की स्नातक या स्नातकोत्तर पढ़ाई की व्यवस्था है । लेकिन यू ए ई के किसी भी विश्वविद्यालयों में हिंदी स्नातक या परास्नातक कक्षाओं में नहीं पढ़ाई जाती है । अगर यहां हिंदी की व्यवस्था हो जाए तो हिंदी और अरबी के समकालीन साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था हो सकती है ।

अनेक अहिंदी भाषी गृहणियाँ अपने खाली समय में हिंदी लिखना-पढ़ना या बोलना सीखना चाहती हैं । अनेक यूरोपीय व अमरीकी छात्र-छात्राएं भारत-पर्यटन के लिए सामान्य हिंदी बोलने व लिखने-पढ़ने की इच्छा रखते हैं । कपड़ों के उद्योग तथा अन्य कार्यों में लगी अनेक महिलाएं (पुरुष भी) हिंदी सीखना चाहते हैं ताकि वे अपने सहकर्मियों (जो अधिकतर हिंदी में बात करते हैं) के साथ हिंदी बोलने का मज़ा उठा सकें । एअरलाइन्स और होटल के उद्योग में लगे व्यक्ति खाली समय में हिंदी सीख कर अपनी योग्यता बढ़ाना चाहते हैं । हम इन सबके लिए विभिन्न स्तरों की हिंदी पढ़ाए जाने की व्यवस्था कर सकते हैं ।

यू. ए. ई. में हिंदी कार्यक्रम का आयोजन करनेवाली कई संस्थाएं हैं । ' प्रतिबिंब ' और ' थियेटरवाला ' नामक दो नाटक संस्थाएं हैं जो हिंदी नाटकों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रही हैं । प्रतिबिंब 1996 से हर वर्ष एक हिंदी नाटक दुबई में खेलते रहे हैं और थियेटरवाला 2007 से ।

इसके अतिरिक्त हर शुक्रवार ' शुक्रवार चौपाल ' के नाम से मेरे घर पर एक साप्ताहिक गोष्ठी होती है जिसमें दुबई, अजमान और शारजाह नगरों के अनेक हिंदी रंगकर्मी और साहित्यप्रेमी सम्मिलित होते हैं । इस गोष्ठी में नियमित रूप से किसी साहित्यिक रचना या नाटक का पाठ होता है । साहित्य या रंगकर्म से संबंधित कार्यशालाएँ होती हैं और नाटकों के रिहर्सल होते हैं । भारत से आए साहित्य या रंगकर्मियों से मुलाकात भी होती है । सन् 2009 से थियेटरवाला प्रतिमाह एक हिंदी नाटक का मंचन कर रहे हैं । इस परंपरा का आरंभ 9 जनवरी, 2009 को हुआ था ।

खाड़ी के देशों से वेब पर भी कुछ महत्वपूर्ण काम हुए हैं । 8-10 हिंदी वेबलॉगों के अतिरिक्त मेरी अपनी वेबपत्रिकाओं ' अभिव्यक्ति ' व ' अनुभूति ' का साप्ताहिक प्रकाशन प्रति सोमवार किया जाता है । इन अंकों को पुरालेखों में इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि वे आज वेब पर हिंदी का सबसे बड़ा साहित्य कोश बन गए हैं ।

यू. ए. ई. में एफ एम के कम से कम तीन ऐसे चैनल हैं जिनपर चौबीसों घंटे हिंदी गाने समाचार और अन्य कार्यक्रम सुने जा सकते हैं । दिन भर इन पर अंतर्राष्ट्रीय उत्पादों के विज्ञापन सुने जा सकते हैं । यह इस बात का सबूत है कि यहाँ हिंदी खूब लोकप्रिय है और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ अपना माल बेचने के लिए हिंदी के महत्व को गंभीरता से महसूस करती हैं । व्यापार में इस प्रकार हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय ज़रूरत को हिंदी की ताकत समझा जाना चाहिए ।

यू. ए. ई. में हिंदी लेखन के क्षेत्र में श्री कृष्ण बिहारी ने बहुत महत्वपूर्ण काम किया है । उन्होंने अरबी परिवेश को चित्रित करने वाली सौ से अधिक कहानियां लिखी हैं जो ' हंस ' से लेकर ' दैनिक जागरण ' तक लगभग हर पत्र पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं । हाल ही में उनके संपादन में दुबई से ' निकट ' नाम से एक पत्रिका का त्रैमासिक प्रकाशन हो रहा है ।

अनुवाद के क्षेत्र में श्रीमती कांता भाटिया ने डॉ. मोती प्रकाश के संस्मरणों के हिंदी अनुवाद का महत्वपूर्ण काम किया है । इसके अतिरिक्त यदाकदा लिखनेवाले और प्रकाशित होनेवाले लेखक और कवि भी कई हैं जिनकी रचनाएं समय पर ' अभिव्यक्ति' और ' अनुभूति ' की शोभा बढ़ाती हैं ।

पूर्णिमा वर्मन, P.O. Box - 25450, Sharjah, UAE

हिंदी शिक्षा संघ : दक्षिण अफ्रीका

' विश्व हिंदी समाचार ' के लिए दक्षिण अफ्रीका से यह द्वितीय प्रतिवेदन है । सन् 2008 अप्रैल से सन् 2009 तक दक्षिण अफ्रीका में हिंदी प्रचार की मुख्य संस्था ' हिंदी शिक्षा संघ ' की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में कई विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनका उल्लेख प्रथम प्रतिवेदन में किया जा चुका है । सन् 2009 में इन आयोजनों की समाप्ति हुई । 28 फरवरी, 2009 को वाद-विवाद प्रतियोगिता (प्रौढ़) के साथ परीक्षा में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए । 60 साल की प्रौढ़ अवस्था में ' हिंदी शिक्षा संघ ' एवं उसके द्वारा संचालित ' हिंदवाणी ' रेडियो हिंदी भाषा एवं संस्कृति की प्रगति पर अधिक ध्यान दे रहे हैं । यह हर दृष्टि से लाभदायक एवं स्तुत्य है । जयंती के उपलक्ष्य में निबंध-लेखन प्रतियोगिता भी रखी गई थी, जिसका पुरस्कार समारोह वर्ष के अंत में होगा ।

हिंदी शिक्षा संघ के अध्यक्ष श्री राज धनलाल एवं उपाध्यक्ष श्रीमती रीना भोरा से दीर्घ हिंदी सेवा सम्मान ग्रहण करते हुए श्रीमती सरस्वती बाल गणेश

डर्बन के भारतीय प्रधान कौंसलावास के प्रयत्नों से हिंदी प्रेमियों को उत्साह प्राप्त होता है । प्रधान कौंसल महोदय और उनके समर्पित सहकर्मियों का भारतवंशी नागरिकों से अत्यंत मधुर संबंध है । कौंसलावास, हिंदी शिक्षा संघ और क्वाजूलू-नाटाल प्रांत के शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 6 मार्च को ' हिंदी दिवस ' मनाने का भव्य आयोजन किया गया था । हर्ष की बात यह है कि सन् 2009 में एक और हिंदी दिवस मनाया जाएगा - 14 सितंबर को, जो इस महत्वपूर्ण उत्सव की मूल तिथि है । कई वर्ष पहले हिंदी शिक्षा संघ ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस भारत के प्रधान कौंसलावास की सहभागिता में मनाया था । इस वर्ष यह कार्यक्रम हिंदी शिक्षा संघ के मुख्यालय में संपन्न होगा ।

उपरोक्त कार्यक्रमों एवं उत्सवों से ज्ञात होगा कि हिंदी के प्रति अतिरिक्त जागरूकता पैदा हो रही है । हिंदी शिक्षण कार्य में ' हिंदी शिक्षा संघ ' तथा शिक्षा विभाग अपनी-अपनी प्रणाली के अनुसार परिश्रम कर रहे हैं । इससे हिंदी को लाभ होगा और परस्पर सहयोग की संभावनाएँ भी बढ़ेगी ।

' हिंदी शिक्षा संघ ' एक स्वैच्छिक संस्था है, जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा-साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देना है । समाज में चल रही अनेक पाठशालाएँ हैं, जो हिंदी शिक्षा संघ की देखरेख में अध्यापन तथा परीक्षण कार्य कर रही हैं ।

उच्च कक्षाओं के लिए संघ अपने मुख्यालय पर माह में एक दिन कक्षाएँ चलाता है, जिसमें शैक्षणिक समिति के सदस्य / अध्यापक स्नेहपूर्वक के साथ शिक्षा प्रदान करते हैं । ये शिक्षक कार्यशिविरों के द्वारा छात्रों एवं पाठशालाओं के अध्यापकों की क्षमता में वृद्धि लाने के प्रयास करते हैं ।

हिंदी भाषा को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रारंभिक दिनों से ही प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है जिसमें प्रतिभागी बाल और वयस्क विद्यार्थी पठन, कविता पाठ, संवाद, रामायण, गीता तथा वेद पाठ, अभिनय, नृत्य, संगीत-गीत में कौशल प्रदर्शित करते हैं । नाटाल प्रांत के तीन क्षेत्रों और गाउटेंग प्रांत में एक स्थल पर स्थानीय प्रतियोगिताएँ संपन्न होती हैं, जिसके पश्चात् अंतिम निर्णायक प्रतियोगिता डरबन मुख्यालय में होती है । इस वर्ष की प्रतियोगिताएँ 19 अप्रैल को शुरु होकर 7 जून, 2009 को पूर्ण हुईं । इन प्रतियोगिताओं के द्वारा हिंदी अध्येताओं की क्षमता बढ़ती है, साथ-साथ उनके परिवार और रिश्तेदार उपस्थित होकर उनका हौसला बढ़ाते हैं और हिंदी के वातावरण में पूरा व्यतीत करके आनंदित होते हैं ।

हिंदी प्रवीण ग्रेड परीक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने पर भारत के उप कौंसुल श्री अमरजीत से पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुश्री आरती पांडे

दक्षिण अफीका में भारत सरकार के प्रतिनिधि, विशेषतः डरबन स्थित प्रधान कौंसलावास हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के विकास के लिए प्रयत्नशील है । कौंसलावास हिंदी की कक्षाएँ चलाता है तथा अन्य हिंदी संस्थाओं को पुस्तकें और अन्य प्रकार के योगदान करता रहता है । हिंदी भाषा और संस्कृति के लिए यह शुभ लक्षण है ।

हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका तथा संबद्ध अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों की ओर से हम विश्व हिंदी परिवार को अपनी शुभकामनाएँ भेजते हैं और यह अनुरोध करते है कि संपर्क स्थापित करके हमें अपने ध्येय तक पहुँचने के लिए अपना सहयोग प्रदान करें । विश्व हिंदी सचिवालय के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा और हिंदी प्रेमियों का संपर्क बढ़ेगा । यही हमारी आशा है ।

प्रस्तुति : प्रो. उषा शुक्ला

अमेरिका में हिंदी कवि सम्मेलन

पिछले दिनों हिंदी यू. एस. ए. नामक हिंदी की स्वयंसेवी संस्था द्वारा न्यू जर्सी के रट्गर्स विश्वविद्यालय के डगलस कैंपस में अपराह्न 1.00 बजे कवि सम्मेलन का विधिवत रूप से शुभारंभ हुआ । कार्यक्रम का शुभारंभ वॉशिंगटन डी. सी के भारतीय राजदूतावास का प्रतिनिधित्व कर रहे श्री अनिल कुमार गुप्ता जी के कर कमलों द्वारा दीप - प्रज्वलन से हुआ । तत्पश्चात बच्चों द्वारा गणेश एवं सरस्वती वंदना की सात्विक संगीतमय प्रस्तुति की गई ।

इस संस्था के संस्थापक तथा सक्रिय कार्यकर्ता श्री देवेंद्र सिंह जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बताया कि कवि सम्मेलन का उद्देश्य लोगों को हिंदी भाषा के प्रति जागरूक करना तथा अमेरिका में हिंदी यू. एस. ए. द्वारा जो हिंदी का अभियान चलाया जा रहा है उससे लोगों को अवगत कराना तथा जोड़ना है । उन्होंने लोगों से हिंदी का स्वयंसेवक बनने की विनती भी की । उसके बाद उन्होंने सियाटल से पधारे मुख्य कवि श्री अभिनव शुक्ल का संक्षिप्त परिचय दिया और कवि सम्मेलन का संचालन उन्हें सौंप दिया ।

श्री अभिनव शुक्ल ने सर्वप्रथम सभी अतिथि कवियों को बारी - बारी से मंच पर आमंत्रित किया । आमंत्रित कवि एवं कवयित्रियों के नाम इस प्रकार हैं – श्री भैरू सिंह राजपुरोहित, श्रीमती रेखा रस्तोगी, श्रीमती शोभा वर्मा, श्री पंकज जैन, श्रीमती बिन्देश्वरी अग्रवाल, श्री हरभगवान शर्मा, श्री देवेन्द्र पाल सिंह, तथा अभिनव शुक्ल ।

अभिनव जी ने अपनी अनुभवी हास्य रचनाओं द्वारा श्रोताओं को अभिभूत किया तथा बातों ही बातों में मंच पर श्री राजपुरोहित जी को बुला लिया । राजपुरोहित जी ने स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देते हुए अपनी दो रचनाएँ सुनाईं । वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रेखा रस्तोगी ने एक कविता और ग़ज़ल सुनाई । युवा कवयित्री श्रीमती शोभा वर्मा जी ने अपनी व्यंग्य रचनाएँ सुनाईं । युवा कवि श्री पंकज जैन ने अपनी कविताओं द्वारा श्रोताओं को संदेश दिया कि अमेरिका को अपनी कर्मभूमि बनाएँ तथा विदेश में रह कर भी अपनी धर्म, संस्कृति, और भाषा के लिए काम करें । फिर हास्य का पिटारा लेकर आए एक हरियाणवी कवि श्री हरभगवान शर्मा जी जिनकी हास्य कविताओं से श्रोता दिल खोलकर हँसे और खूब तालियाँ बजाईं ।

मध्यांतर में श्री देवेंद्र सिंह जी ने हिंदी यू. एस. ए. के स्वयंसेवी शिक्षकों, स्वयंसेवकों, तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों का परिचय करवाया ।

सबसे पहले उन्होंने ये बताया कि हिंदी यू. एस. ए. का मुख्य उद्देश्य अमेरिका के स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्थान दिलाना है । इसके लिए उन्होंने सभी भारतीयों से सहयोग की विनती की। श्री देवेंद्र सिंह ने कहा कि हमें आपके धन की, समय की, सेवा की, विचारों की तथा आपके साथ की पग -पग पर आवश्यकता है । इसके बाद उन्होंने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ' श्री डॉ. सुधीर पारिख 'जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनसे दो शब्द बोलने का आग्रह किया । सुधीर भाई पारिख जी को पिछले वर्ष 'प्रवासी भारतीय सम्मेलन' में 'सर्वश्रेष्ठ प्रवासी भारतीय ' के सम्मान से सम्मानित किया गया था । श्री पारिख जी ने हिंदी यू. एस. ए. के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा भविष्य में हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया । साथ ही उन्होंने हिंदी यू. एस. ए. के सामने ' हिंदी चेयर ' (न्यू जर्सी) बनाने का भी प्रस्ताव रखा ।

श्री देवेंद्र सिंह ने उत्तरीय पहना कर तथा श्री अनिल कुमार गुप्ता जी ने सम्मान पत्र देकर श्री पारिख जी का सम्मान किया । उसके बाद श्री पारिख ने हिंदी यू. एस. ए. के लगभग 20 शिक्षकों को उनकी अनवरत हिंदी सेवा के लिए प्रमाण पत्र तथा उपहार प्रदान किए । यह ज्ञात हो कि हिंदी यू. एस. ए. लगभग 25 पाठशालाएँ पूरे अमेरिका में चला रहा है । उसके बाद श्री अनिल कुमार गुप्ता जी, जो वॉशिंगटन डी. सी. के भारतीय राजदूतावास से इस कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए विशेष रूप से पधारे थे तथा जो कम्युनिटी अफेयर मिनिस्टर के पद पर कार्यरत हैं, को मंच पर आमंत्रित किया गया तथा श्री नवीन गुप्ता जी, जो न्यू जर्सी के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, के द्वारा सम्मान पत्र प्रदान किया गया । श्री गुप्ता जी ने अपने संबोधन में हिंदी के कार्यक्रमों तथा शिक्षा हेतु हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया । उसके बाद 'चौपाटी' के मालिक श्री चंद्रकांत पटेल को प्रथम हिंदी नाम पट्टिका (साइन बोर्ड) लगाने के लिए सम्मानित किया गया।

हिंदी यू. एस. ए. का प्रयास है कि 'चाइना टाउन' की तरह 'इंडिया बाज़ार' भी अपनी स्वयं की भाषा से सजे । इस प्रयास का पहला कदम श्री पटेल ने उठाया है । वे निश्चय ही सम्मान के पात्र हैं । आशा है अन्य व्यापारीगण भी उनका अनुसरण करेंगे ।

हिंदी सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य मानने वाले श्री देवेन्द्र सिंह जी मंच पर आए जिनकी कविताएँ लिखने का उद्देश्य सोए हुए समाज को जगाना तथा लोगों को कर्मठ बनाकर अपना जीवन सफल बनाने के साथ-साथ माँ भारती की सेवा करना सिखाना है । बहुत सारे श्रोता उनकी 'हिंदू जागो, हिंदी सीखो, हिंदुस्तान बचाना है' पंक्ति साथ-साथ तथा बाद में गुनगुनाते नज़र आए। अंत में, मंच संभाला श्री शुक्ल जी ने । लखनऊ का वर्णन समेटे जब उनकी यादों की गठरी खुली तो बहुत से लोग मंत्र-मुग्ध हो, बिना वायुयान ही लखनऊ पहुँच गए और रबड़ी, कचौड़ी का स्वाद लेकर तभी लौटे जब कविता समाप्त हुई । इस प्रकार दोपहर एक बजे प्रारंभ हुआ यह कार्यक्रम संध्या ठीक 5 बजे समाप्त हुआ । ••

' कर्मभूमि ' से साभार